

अमिल कुमार

इतिहास विभाग, आर्य समाज कालेज

कॉलेज महाराजगंज (स्थान)

सूती वस्त्र उद्योग एवं गूद उद्योग

x

Page No.

Date / /

मुगलकालीन भारत की आर्थिक स्थिति उत्तम स्तर पर नहीं थी। देश सुखी सम्पन्न था। कृषि प्रधान देश होने के कारण यहाँ उद्योग-व्यापार कृषि पर आश्रित था। किन्तु अंग्रेजों के पदार्पण के तहत ही भारत की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी क्योंकि कम्पनी शासन का एक मात्र उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण करना था। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हुआ। कुछ मिलें खुलीं, कुछ फैब्रिकों बनीं। यह अच्छा ही था किन्तु इसके कुछ दुष्परिणाम भी पड़े और कृषि उद्योग श्रमिकों का विनाश हो गया। देश आर्थिक असंतुलन का शिकार हो गया। फलतः भारत में औद्योगिक क्रांति नहीं हो पाई। जो ही कृषि पर आधारित उद्योग श्रमिकों को रोजे-रोजें मिले। सूती वस्त्र उद्योग एवं गूद उद्योग महत्वपूर्ण थे।

सूती वस्त्र उद्योग — भारत में सर्वप्रथम 1818 ई. में हावड़ा जिले में पहला मिल 'फोर्ड ग्लोस्टर मिल' के नाम से खोली गई। यह स्थानीय उद्योग कपास की कटाई करती थी। 1840 ई. में बम्बई में तत्कालीन मिल 'बम्बई कटाई एवं बुनाई कम्पनी लिमिटेड' के नाम से कपासगी नानावोय द्वारा प्रारंभ की गई। 1854 ई. में व्यापारियों ने एक कम्पनी का निर्माण करके एक वस्त्र मिल की स्थापना की। 1857 ई. में बम्बई में एक सिलिल मिल शुरू की गई। इस प्रारंभिक सफलता ने देश के अनेक अमीर व्यापारियों को वस्त्र उद्योग प्रारंभ करने की प्रेरणा दी। फलतः 1851 से 1915 के बीच 73 फार्मों ने 46 उद्योग बम्बई में प्रारंभ किये। 1882 और 1899 तक बम्बई में 39 कटाई मिलें खुलीं। 1860 ई. से 1868 ई. तक देश के 13 वस्त्र उद्योगों में अकेले बम्बई में 11 मिलें खुलीं। 1876 ई. तक देश में 47 मिलें स्थापित की गईं। 1875-1890 तक वस्त्र उद्योग की स्थिति अच्छी रही। इस बीच उद्योगों का प्रसार भी हुआ। 1858 तक देश में 58 मिलें कार्यरत हो गईं।



वस्त्र उद्योग देश के अन्ध भागों में भी खुलने लगा। एक सेवा निवृत्त सरकारी कर्मित रंचो दलाल छोटे लाल ने 1859 में अहमदाबाद में प्रथम मिल की स्थापना की। 1880-1900 के बीच अहमदाबाद में 26 मिलें खुलीं। एक ओर तो भारतीय व्यापारी वस्त्र मिलों को बम्बई और अहमदाबाद में विकसित कर रहे थे, दूसरी ओर ब्रिटिश व्यापारी भी पीछे नहीं थे। 1861 और 1923 के बीच मैसर्स ब्रैग सदरलैंड एण्ड कं० के कानपुर में चरख लड़ी मिलों की स्थापना की। 1897 के बाद वस्त्र उद्योग बोलोपुर और कापुर में भी खुलने लगे।

19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में वस्त्र उद्योग की भीषण हड़ताल के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मुद्रा एवं विनिमय की कठिनाइयों तथा बम्बई में हैजा फैलने से 1897 ई. में दीर्घकाल तक उद्योग बन्द रहे। विनिमय की कठिनाइयों से, सिक्कों की कमी बन्द होने से तथा चीन और जापान के साथ व्यापार कम होने से सूती उद्योगों को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। फिर भी नवीन सूती उद्योग काममें होते रहे और 1900 ई. तक भारत में 195 मिलें काममें हो गईं।

वस्त्र उद्योग मुख्यतः बम्बई और अहमदाबाद में स्थापित किए गए। इसके कई कारण थे। प्रथम, बम्बई महाराष्ट्र, गुजरात, कच्छ, खरार और मध्यप्रान्त में कपास का काफी उत्पादन होता था। अतः बम्बई और अहमदाबाद की मिलों को कच्चा माल सुगमतापूर्वक मिल जाता था। सस्ते मजदूर भी उपलब्ध थे। बम्बई के व्यापारी—पारसी, आरिया, बोहरा आदि विदेशी व्यापार से काफी सम्पन्न बन गये थे। वे वस्त्र उद्योग में अपनी पूंजी का निवेश करने लगे। इस उद्योग के व्यापार भी विस्तृत थे। चीन में भारतीय वस्त्रों और चायों की बड़ी मांग थी। स्वदेशी ड्राफ्टिंग (1906) ने सूती वस्त्र उद्योग को काफी प्रोत्साहित किया। 1910 ई. तक मिलों की संख्या बढ़कर 263 हो गई।



प्रथम विश्वयुद्ध ने वस्त्र उद्योग की प्रगति रूढ़िवादी  
मिलों ने काफी मुनाफा कमाया तथा मिलों के अंतर्गत के मूल्यों में बहुत  
अधिक वृद्धि हुई। युद्धकाल में मशीनों के महत्वपूर्ण भागों का आयात  
कामना संभव नहीं था अतः नवीन मिलों की स्थापना करने का कोई प्रश्न नहीं था।  
1919-20 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के कारण अनेक मिलें विनीत एवं  
भौतिक हंग से इसकी कमजोर हो गईं बि. वे पाली-धर्मियों का सामना  
न कर सकीं। वस्त्र उद्योग लम्बे समय तक मिल-मालिक संस्था के नेतृत्व में  
पारस्परिक सहयोग द्वारा उत्पादन को कम करने की योजना बनाने लगा।

इसी बीच 1929 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो  
गया फलतः कपड़े के उत्पादन में वृद्धि हुई। नवीन मिलों ने उच्च  
कोटि का सूत एवं कपड़े का उत्पादन शुरू कर दिया। कच्ची सामग्री  
एवं मशीन सम्बन्धी कठिनाइयों के बावजूद सरकारी संरक्षण से उद्योग  
ने तीव्र प्रगति की। 1945 ई. तक मिलों की संख्या बढ़कर 412 हो गई  
और वस्त्रों का आयात 560 मिलियन गज से घटकर 50 मिलियन गज हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने सूती उद्योग में नवीन  
समस्याओं की जन्म दिया। इसके साथ ही साथ आयात की समाप्ति से  
देश के अन्दर और बाहर एवं मित्र राज्यों की ओर से भारतीय माल की  
सैनिक मांग बढ़ी। फलतः वस्त्र की कमी हो गई और मूल्य बढ़ गये।  
भारत सरकार ने अनेक योजनाएँ प्रारंभ की। इनमें प्रमाण वस्त्र उद्योग  
योजना (1942) कपास वस्त्र एवं सूत निर्माण आदेश (1943 एवं 1945 में  
संशोधन) प्रमुख थे। इनके द्वारा उत्पादन वितरण तथा कपास के मूल्य  
को निर्धारित करने का प्रयास किया। इनके अतिरिक्त 1943 में वस्त्र  
निर्माण बोर्ड की स्थापना की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य उत्पादन बढ़ाना  
था। 1942 में उपयोजिता वस्त्र योजना शुरू की गई। परिवहन में  
मितल्यमिता लाने एवं अनावश्यक आवागमन रोकने के उद्देश्य से कपास  
वस्त्र (आवागमन पर निर्माण) आदेश (1946) पारित किया गया।



माली का मुहाना का निर्माण करने हेतु सूती वस्त्र (कच्चा माल और भंडारण) आदेश (1946) पारित किया गया। 1948 में उर्वरुक्त प्रकार के वस्त्र उत्पादन को अधिकतम करने हेतु लक्ष्मी को सुझाव देने समन्वयी सूची वस्त्र (निर्माण) आदेश पारित किया गया। फिर भी ये समस्त योजनाएं अंशतः ही सफल सिद्ध हो सकीं।

भारतीय वस्त्र उद्योग को समग्र-समग्र पर संरक्षण भी प्रदान किया गया औसत 1930 में सूती वस्त्र उद्योग (संरक्षण) अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान निम्नीतिवत हैं।

(क) 15% प्रति पौंड ब्रिटेन से आयात होने वाले सादे धागे पर आयात कर लगाया।

(ख) अन्य वस्त्र जो ब्रिटेन से आयात होता था, उस पर 15% आयात कर लगाया गया।

(ग) अन्य देशों के वस्त्र आयात पर 20% का लगाया गया।

(घ) अन्य देशों से अन्य प्रकार के कपड़े के आयात पर 20% लगाया गया।

1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन ने वस्त्र उद्योग के विकास को प्रोत्साहित किया। मार्च 1934 में सरकार ने ब्रिटिश कपड़े पर आयात का बढ़ाकर 20% तथा गैर ब्रिटिश कपड़े पर 25% का किया। इसी वर्ष अक्टूबर में आयात करों पर 25% का अधिमा लगाया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त नियुक्त किंगडम नवीन प्रभुत्व बोर्ड ने उद्योग के संरक्षण के दावे को पुनः अंशित। 1947 में वस्त्र उद्योग से संरक्षण हटा दिया पर हटा लिया गया कि आवश्यकता पड़ने पर इसे पुनः लया कि जायगा।

1947 में देश विभाजन ने वस्त्र उद्योग को बड़ा प्रभावित किया। सिंध और पश्चिम पंजाब का उपजाऊ व सिंचित क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया। इस कारण भारत को आयात पर निर्भर रहना पड़ा। इस प्रकार वस्त्र उद्योग प्रधानतः एक पूर्णतः भारतीय उद्योग था।